अस्पृश्य जातियों में सामाजिक गतिशीलता

डॉ० दीनानाथ रजक*

सामाजिक गतिशीलता का सम्बन्ध सामाजिक संस्तरण और सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित है। सामाजिक गतिशीलता वृहद सामाजिक परिवर्तन का एक अंग हे। सामाजिक परिवर्तन सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक संरचना तथा प्रकार्यों एवं संगठन में होने वाले परिवर्तन को स्पष्ट करता है। जबकि सामाजिक मद में किसी तरह का परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता कहलाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जिस पद या प्रस्थिति में हम समाज में प्रतिष्ठित हैं, उसमें कोई भी परिवर्तन होता है, तो उसे सामाजिक गतिशीलता कहा जा सकता है।

सामाजिक गतिशीलता दो प्रकार के होते हैं जिनमें एक को क्षैतिज गतिशीलता तथा दूसरे को उदग्र गतिशीलता कहा जाता है। क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता का अर्थ एक व्यक्ति या सामाजिक वस्तु का एक ही स्तर में स्थिति एक समूह से दूसरे समूह में स्थानान्तरण है। क्षैतिज गतिशीलता भी दो प्रकार के होते हैं जिन्हें उर्ध्वगामी तथा अधोगामी गतिशीलता कहा जाता है। उर्ध्वगामी गतिशीलता ऊपर की ओर सामाजिक गतिशीलता तथा अधोगामी नीचे की ओर सामाजिक गतिशीलता को सूचित करता है। एम०एन० श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण के माध्यम से उदग्र गतिशीलता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि निम्न जातियाँ उच्च जातियों के संस्कारों, विश्वासों, विचारों तथा रहन–सहन के ढँग को अपनाकर उच्च जातियों की श्रेणी में आने का प्रयत्न करते हैं।

आजादी प्राप्ति के बाद समाज के निम्न तथा दबे जातियों के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षणिक सुविधाएँ प्रदान की गयी ताकि ये सामान्य स्तर के जीवन व्यतीत कर सकें। इसी का परिणाम है कि शिक्षा प्राप्त कर ये विभिन्न व्यवसायों को कर रहे हैं तथा उच्च नौकरियों को भी प्राप्त कर रहे हैं। पंचायतों, विधन परिषदो, राज्य के विधन सभाओं तथा संसद में अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा पिछड़ी जातियों के सदस्य चुने जा रहे हैं और एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभर रहे हैं। इस तरह अनुसूचित जातियों, जनजातियों का सामाजिक स्तर उच्च हुआ है और इनमें उर्ध्व सामाजिक गतिशीलता दिखाई दे रहा है। दूसरी ओर उच्च जातियाँ निम्न जाति के उच्चाधिकारियों अथवा नेताओं के यहाँ अधीनस्थ कर्मचारी/सेवक के रूप में कार्य कर रहे हैं, जो अधोगामी सामाजिक गतिशीलता का प्रतीक है।

***एम०ए०, पी–एच०डी० (समाजशास्त्र) मगध विश्वविद्यालय, बोध गया।**

सोरोकिन ने गतिशीलता के कुछ कारकों की चर्चा की है :–

(1) किसी समूह में जब पुराने भर्ती लोगों की रिटायर्ड होने पर नये की भर्ती की जाती है,

(2) रोमन चर्च में पादरी की मृत्यु पर नये पादरी की नियुक्ति पर,

(3) माता–पिता द्वारा अपने बच्चों में असमानता होने पर दायित्वों को पूरा न कर पाने पर,

(4) व्यक्तियों/समूहों के सामाजिक–सांस्कृतिक प्र्यावरण में परिवर्तन होने पर सामाजिक गतिशीलता देखने को मिलती है।

प्रस्तुत अध्ययन का विषय अस्पृश्य जातियों के सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन है।

अध्ययन का उद्देश्य :–प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अस्पृश्य जातियों के सामाजिक गतिशीलता को ज्ञात करना है।

उपकल्पना :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निर्मित उपकल्पनायें निम्नलिखित हैं :–

(1) अस्पृश्य जातियों के अशिक्षित लोगों को SC@ST कानून की जानकारी नहीं है।

(2) अस्पृश्य जातियों के लोगों को दलित योजनाओं की जानकारी नहीं है।

(3) अस्पृश्य जाति के लोगों का योजनाओं का लाभ नहीं मिला है।

(4) अस्पृश्य जातियों अधिकांश लोग मजदूरी करते हैं।

(5) अस्पृश्य जातियों के लोग लाभप्रद व्यवसाय की इच्छा रखते हैं।

अध्ययन का क्षेत्र :–प्रस्तुत अध्ययन के लिए अरवल जिला के करपी प्रखंड का चयन किया गया है।

निदर्श :–अध्ययन क्षेत्र से 200 अस्पृश्य जातियों के लोगों का उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के द्वारा उत्तरदाता के रूप में चयन किया गया है।

प्रविधि :–प्राथमिक आँकड़ों का संकलन करने के लिए अनुसूची का निर्माण किया गया ।

तथ्य संकलन के स्रोत :–तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितियक स्रोतों से किया गया है।

तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण :–साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं से संग्रहित आँकड़ों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण किया गया।

परिणाम :–उत्तरदाताओं को SC@ST कानून तथा दलित योजनाओं की जानकारी नहीं है। दलितों को दलित योाजनाओं का लाभ नहीं मिला है। सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने कहा कि चोरी आदि होने पर उनके साथ गाँव वालों का सामान्य व्यवहार होता है। सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके आवासीय क्षेत्र में चोरी/अपराध होने पर पुलिस चोरों के साथ सामान्य व्यवहार करती है। सर्वाधिक उत्तरदाता मजदूरी करते हैं। उत्तरदाता खाने–पीने की दूकान कर रहे हैं। सर्वाधिक चिकित्सक से ईलाज कराते हैं। अधिकांश उत्तरदाता आपसी विवादों के निपटारे हेतु जाति पंचायत का सहारा लेते हैं। सर्वाधिक अस्पृश्य जाति के लोग नशाखोरी करते हैं। नशा सेवा में महिलाएँ भी संलग्न रहती हैं। नशा सेवन से उनके आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अधिकांश उत्तरदाता मतदान करते हैं। उत्तरदाताओं के पास निर्धनता कार्ड है। अधिकांश उत्तरदाताओं को गरीबी रेखा से नीचे कार्ड (B.P.L.) सम्बन्धी सुविधाओं का लाभ मिला है। अधिकांश उत्तरदाता लाभप्रद व्यवसाय की इच्छा रखते हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके व्यवसाय में परिवर्तन हुआ है, जिसके कारण उनकी आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति में सुधार हुआ है।

संदर्भ सूची

(1) Jones : Basic Sociological Principles.
(2) Dubey, S.C. : Social Mobility among the Profession.
(3) Sorukin, P.A. : Social and Cultural Mobility.
(4) Srinivas, M.N. : Social change in modern India.
(5) Hodges (Jr.) H.M. : Social Stratification.

*****

"A Study of Acadmic Achievement and Creative Environment of the Problem and Socially this Advantage Children"

Dr. Madhav Kumar

While going through the literature on creativity, it appears thatinvestigators have been much more intetested in the study of normal subjects. Either the study has been made on normal subjects or on the professional artist by using verbal and non verbal test of creativity or simply by way of performance analysis. Creativity has been studied in context of intelligence, personality variables, environmental setting including SES and cultural background. The familial background factors have been taken into account in order to explore the relationship, if any, between such charateristic and creativity in the direction which support the positive influence of personality and the mode of perceiving one's own self on the creative development of the individual. In the background of such studies, the present resarcher estimated that if an idividual's personality and perception can determine the creative, present within, then it is possible thgat probvlem children like delinquent or a psychopath and disadvantaged children who have different attitude towards towards themselves as well as towards the world, might chanalized their inferiority or deviancy in different directions. A problem of disadvantaged childred may divert their attention from their inferiority and helplessness in a way, which can be defensive in nature and may make then preoccupied with different types of creative displays.

The paper consists of a deep and through study of personality assessment tool NEO - FFI. Personality traits are defined as the relatively enduring patterns of thoughts, feelings and behaviours that distinguish individuals from one another. Personality variables are relevent to carrer choice and job satisfaction has been considered by several personality theories. Indian education has undergone a paradigm shift. There have been funamental and irreversible changes in the economy, outlook of

***Assistant Professor Dept. Of Psychology S.K.M. College, Jehanabad**